Children's
RESEARCH UNIVERSITY
(A State Public University established by Government of Gujarat)

TWO DAYS NATIONAL SEMINAR

ON

"संतान विकास की समग्र दृष्टि: गर्भाधान से शैशव शिक्षा तक"

"A Holistic Perspective on Child Development: From Preconception to Toddler's Education"

ORGANISED BY

DEPARTMENT OF PRENATAL CARE
CHILDREN'S RESEARCH UNIVERSITY

&

DEPARTMENT OF TODDLER'S EDUCATION
CHILDREN'S RESEARCH UNIVERSITY

17-18 APRIL, 2026

Children's Research University
Near Jalaram Temple, Opp. Public Garden,
Sector 29, Gandhinagar-382030

चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी : परिचय

चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी की कल्पना सर्वप्रथम गुजरात के तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री तथा वर्तमान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी द्वारा प्रस्तुत की गई थी। इस संदर्भ में उन्होंने भावि पीढ़ियों के सर्वांगीण विकास एवं उन्नति के लिए विशेष रूप से समर्पित एक ऐसे विश्वविद्यालय की आवश्यकता पर बल दिया था। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस संस्थान का प्रमुख उद्देश्य बाल-अध्ययन से संबंधित नवीन एवं मार्गदर्शक (पाथ-ब्रेकिंग) शोध कार्यों को प्रोत्साहित करना होगा। इस विश्वविद्यालय का मूल उद्देश्य भारतीय चिंतन एवं आध्यात्मिक दृष्टि के आधार पर बालक का समग्र विकास सुनिश्चित करना है, जो मानव जीवन के संपूर्ण कालखंड—गर्भाधान से लेकर किशोरावस्था तक को समाहित करता है। यहीं विशेषता इस विश्वविद्यालय को अन्य पारंपरिक विश्वविद्यालयों से भिन्न, नवीन एवं अग्रगामी बनाती है। बाल-विकास के क्षेत्र में इस प्रकार से कार्य करना गुजरात सरकार के लिए अत्यंत गर्व का विषय है।

चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी के प्रणेता प्रो. किरीटभाई जोशी के अनुसार, “शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। बच्चें की वास्तविक शिक्षा माँ के गर्भ से ही आरंभ हो जाती है। यदि हमें एक श्रेष्ठ भारत और एक उज्ज्वल विश्व का निर्माण करना है, तथा यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों में दिव्य चेतना का विकास हो, तो यह आवश्यक है कि गर्भस्थ शिशु को अपनी माता के माध्यम से ही संस्कार एवं मूल्य प्राप्त हों।” चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी आज के बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें मित्रता, पारस्परिकता और सामंजस्य से युक्त एक नए विश्व के निर्माण की दिशा में अग्रसर करेगी, जो संकीर्णता, संघर्षों, विशिष्टतावाद तथा अतीत के बोझ से ऊपर उठकर भविष्य के उन्नयन, प्रकाश और समृद्धि की ओर ले जाएगा।

प्रि-नेटल केर विभाग

चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी का प्रि-नेटल केर विभाग एक नवोन्मेषी पहल है, जो मनुष्य के जीवन के गर्भकालीन चरण में गर्भ के समग्र विकास के लिए विविध आयामों पर कार्य करता है। प्राचीन भारतीय परंपराओं और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित यह विभाग ऐसे वातावरण निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है, जो माता तथा गर्भस्थ शिशु-दोनों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक विकास को सुदृढ़ बनाता है । प्राचीन ज्ञान की समृद्ध परंपरा और समकालीन शोध से प्रेरणा लेते हुए, यह विभाग गर्भवती माताओं एवं परिवारों को गर्भ के सर्वोत्तम एवं समग्र विकास हेतु मार्गदर्शन प्रदान करने का लक्ष्य रखता है |

विभाग की दार्शनिक दृष्टि के केन्द्र में यह मान्यता निहित है कि गर्भावस्था की नौ माह की यात्रा एक शारीरिक प्रक्रिया मात्र नहीं है, बल्कि मन, शरीर और आत्मा के बीच एक गहन एवं सूक्ष्म समन्वय है। गर्भ संस्कार—अर्थात् "गर्भस्थ शिशु का संस्कार"-के महत्व को प्रतिष्ठित करने वाली प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्पराओं से प्रेरणा लेकर, यह विभाग ऐसे शिक्षण-सूत्रो की एक समग्र संरचना प्रस्तुत करता है, जो समकालीन जीवन की आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करती है। आयुर्वेद, शिक्षा, मनोविज्ञान, संस्कृत, पोषण, योग, संगीत, चिकित्सा एवं आध्यात्म जैसे विविध क्षेत्रों से आने वाले हमारे विशिष्ट विशेषज्ञ एक साझा उद्देश्य के साथ कार्य करते हैं | इस विभाग में गर्भवती महिलाओं के लिए नियमित गर्भसंस्कार कक्षाएं चलाई जाती हैं | इन कक्षाओं में गर्भवती महिलाओं के लिए नियमित कक्षाओं में प्रार्थना, गीत, संगीत, योग, कला और शिल्प, वैदिक गणित, गर्भ से बातचीत (गर्भ संवाद), आहार और व्यायाम की व्यावहारिक और सीधी शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त सीमंतोनयन संस्कार नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।

टॉडलर एज्युकेशन विभाग

चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी अधिनियम की धारा 6 (11) के अनुसार टॉडलर एज्युकेशन विभाग कार्यरत है। जन्म से तीन वर्ष तक की आयु के बच्चों के माता-पिता बच्चों की उत्कृष्टता, समग्र विकास तथा लालन-पालन से संबंधित मार्गदर्शन एवं विविध विकासात्मक गतिविधियों हेतु चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी के टॉडलर एज्युकेशन विभाग में पंजीकरण कराते हैं। यदि माता-पिता एवं परिवार उत्कृष्ट संतानों की कामना रखते हैं, तो सर्वप्रथम परिवार को स्वयं उसकी तैयारी करनी चाहिए। बच्चें के जन्म के पश्चात माता-पिता एवं परिवार बच्चें की समुचित देखभाल कर सके, बाल विकास के सभी पहलुओं पर मार्गदर्शन प्राप्त कर सके तथा बालक के लालन-पालन से जुड़ी हुई विभिन्न समस्याओं एवं दुविधाओं के संदर्भ में उपयुक्त निर्णय ले सकते हैं। चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी में "टॉडलर एज्युकेशन विभाग" इसी उद्देश्य से कार्यरत है।

"टॉडलर एज्युकेशन विभाग" का एक अन्य उद्देश्य बच्चों तथा उनकी माताओं या परिवार के सदस्यों को उनके प्रारंभिक विकास के संदर्भ में सहायता प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक संघर्ष, भावनात्मक समस्याएँ, व्यवहारगत कठिनाइयाँ तथा अन्य विकासात्मक पहलुओं के संदर्भ में मार्गदर्शन प्रदान करना भी इस विभाग का कार्य हैं | इस विभाग में माता एवं बच्चों को बाल विकास के अनुरूप विविध गतिविधियाँ जैसे प्रार्थना, अभिनय गीत, संगीत, कहानी, योग, त्यौहार के अनुरूप क्रियाकलाप एवं बच्चों के विकास के अनुरूप गतिविधियाँ करवाई जाती हैं |

परिसंवाद के संदर्भ में ...

"संतान विकास की समग्र दृष्टि: गर्भाधान से शैशव शिक्षा तक" विषय पर आयोजित यह राष्ट्रीय स्तर का परिसंवाद भारतीय चिंतन परंपरा एवं आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय से बाल विकास की एक समग्र, संवेदनशील और दूरदर्शी समझ को प्रस्तुत करने का प्रयास है। यह परिसंवाद इस मूल अवधारणा पर आधारित है कि संतान का विकास केवल जन्म के पश्चात् आरंभ नहीं होता, बल्कि गर्भाधान से पूर्व की तैयारी, गर्भकालीन संस्कार, प्रसवोत्तर देखभाल तथा शैशवावस्था की शिक्षा ये सभी चरण एक सतत और परस्पर संबद्ध प्रक्रिया हैं।

इस राष्ट्रीय परिसंवाद का प्रमुख उद्देश्य गर्भाधान से लेकर शैशव शिक्षा तक के विभिन्न आयामों शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पर गहन विमर्श करना है। परिसंवाद में गर्भ संस्कार, पंचकोश सिद्धांत, प्रथम सहस्र दिन (First Thousand Days), सकारात्मक पालन-पोषण, पारिवारिक वातावरण, प्रारंभिक मस्तिष्क विकास, पोषण, स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, योग, संगीत, साहित्य एवं संस्कार आधारित शिक्षा जैसे विषयों पर विचार-मंथन किया जाएगा।

इस परिसंवाद में देशभर से प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, चिकित्सकों, मनोवैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों, नीति-निर्माताओं तथा अभिभावकों की सहभागिता अपेक्षित है। विशेषज्ञ वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्र, व्याख्यान एवं संवाद सत्र, बाल विकास से संबंधित नवीन अनुसंधानों, अनुभवों और व्यवहारिक दृष्टांतों को साझा करने का सशक्त मंच प्रदान करेंगे।

"संतान विकास की समग्र दृष्टि" पर केन्द्रित यह राष्ट्रीय परिसंवाद न केवल अकादमिक विमर्श तक सीमित रहेगी, बल्कि समाज में जागरूक, संस्कारित, स्वस्थ एवं संतुलित पीढ़ी के निर्माण की दिशा में एक सार्थक पहल सिद्ध होगा। यह परिसंवाद भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन विज्ञान के समन्वय से भविष्य की संतानों के सर्वांगीण विकास हेतु मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

Sub-Theme

1. गर्भाधान पूर्व - स्वास्थ्य एवं गर्भ विकास

- गर्भाधान पूर्व : स्वास्थ्य और संतान विकास
- मातृ-पितृ मानसिक स्वास्थ्य का गर्भ विकास पर प्रभाव
- गर्भाधान-पूर्व, गर्भकालीन एवं प्रसूति पश्चात् पारिवारिक वातावरण का गर्भस्थ शिशु एवं शिशु विकास पर प्रभाव
- मातृत्व देखभाल में सामाजिक–आर्थिक कारकों की भूमिका

2. गर्भसंस्कार, आयुर्वेद एवं भारतीय ज्ञान परंपरा

- आयुर्वेदिक गर्भसंस्कार : शास्त्र और आधुनिक विज्ञान
- गर्भकालीन पोषण : आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद का समन्वय
- आयुर्वेद एवं शिशु विकास
- पंचमहाभूत एवं शिशु-विकास
- शिशु का पंचकोशीय विकास
- शिशु-संस्कार एवं विकास : परंपरागत और आधुनिक संकल्पना

3. भ्रूण, तंत्रिका (Nerve) एवं मस्तिष्क विकास

- भ्रूण का न्यूरोसाइकोलॉजिकल विकास
- गर्भ से शैशवावस्था तक तंत्रिका एवं मस्तिष्क विकास
- ध्वनि, मंत्र, संगीत और रंगों का भ्रूण विकास पर प्रभाव

4. प्रथम सहस्र दिवस (First thousand days): प्रारंभिक जीवन की निर्णायक अवधि

- प्रथम 1000 दिन : समग्र विकास की निर्णायक अवधि
- शैशव शिक्षा की नींव : जन्म से 3 वर्ष तक

5. प्रथम सहस्र दिवस में योग: मातृत्व और शिशु विकास का समग्र दृष्टिकोण

- गर्भावस्था में योग और प्राणायाम का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक प्रभाव
- जन्म के बाद शिशु और माता के लिए योगाभ्यास आधारित अभ्यास
- प्रथम 1000 दिनों में योग के माध्यम से न्यूरो-मोटर और संज्ञानात्मक विकास
- शारीरिक स्वास्थ्य, पोषण और योग का समन्वय
- शैशवावस्था में योग आधारित खेल और रचनात्मक गतिविधियाँ
- योग और मनोवैज्ञानिक विकास: शिशु में भावनात्मक सुरक्षा और आत्मविश्वास
- भारतीय परंपरा और आधुनिक विज्ञान के दृष्टिकोण से योग और प्रथम 1000 दिन

6. गर्भसंस्कार एवं शिशु शिक्षा के दार्शनिक, सैद्धांतिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार

- गर्भसंस्कार और शिक्षा दर्शन: प्रारंभिक मूल्य और संस्कार का समावेश
- भारतीय और पाश्चात्य शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन
- गर्भसंस्कार और शिक्षा दर्शन में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयाम
- शिक्षा-दर्शन एवं शिशु शिक्षा के प्रमुख विचारक
- भारतीय चिंतन एवं शिशु विकास
- शिशु विकास से संबंधित शिक्षा के सिद्धांत
- मनोविज्ञान एवं शिशु विकास

7. प्रथम सहस्र दिवस में भारतीय साहित्य: प्रारंभिक जीवन का समग्र विकास

- गर्भकाल और शिशु के अवस्था में कथाएँ, गीत और मंत्र का प्रभाव
- भारतीय साहित्यिक परंपरा और नैतिक/सांस्कृतिक मूल्य शिक्षा
- भाषा, संवाद और सुनने की क्षमता का संवर्धन
- शैशव शिक्षा में लोककथा, कविता और संगीत आधारित गतिविधियाँ का शिशु विकास पर प्रभाव
- गर्भावस्था में भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक कथानक का भावनात्मक पोषण, मानसिक स्थिरता, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास के विकास पर प्रभाव
- सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिक दृष्टिकोण के माध्यम से शिशु शिक्षा
- गर्भकाल से शैशवावस्था तक साहित्य और संस्कार का समग्र एकात्म दृष्टिकोण

8. स्वास्थ्य, पोषण एवं भावनात्मक विकास

- शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण
- मातृ मानसिक स्वास्थ्य एवं प्रारंभिक शिशु विकास
- अभिभावक–शिशु संबद्धता (Attachment) एवं शिशु विकास
- संस्कार, भावनात्मक पोषण एवं मूल्य-आधारित शिशु विकास
- प्रारंभिक बाल्यावस्था में नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास

9. पर्यावरण, प्रकृति एवं शिशु विकास

- पर्यावरणीय विषाक्तता (प्रदूषण, रसायन) और भ्रूण–शिशु स्वास्थ्य
- प्रकृति-आधारित पालन-पोषण (Nature-based parenting)
- जलवायु परिवर्तन और प्रारंभिक बाल स्वास्थ्य

10. शिशु विकास के संदर्भ में शिक्षाशास्त्र, अधिगम एवं रचनात्मक विधियाँ

- खेल एवं खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र (Play & Toy-Based Pedagogy)
- खेल एवं अधिगम (Play and Learning)
- गतिविधि-आधारित एवं अनुभवात्मक अधिगम (Activity based and Experiential learning)
- शिशु शिक्षा में क्रियात्मक गीत, संगीत, कठपुतली, कथा-वाचन एवं भूमिका-अभिनय
- शिशु शिक्षा में कलात्मक/सौंदर्यात्मक विकास

11. परिवार संरचना में परिवर्तन: निःसंतानता, एकल संतान और एकल अभिभावकता के संदर्भ में शिशु विकास

- निःसंतानता (No Child) : सांप्रत सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य
- एकल संतान (Single Child) और व्यक्तित्व विकास
- एकल अभिभावकता (Single Parenting) : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ
- परिवार संरचना में परिवर्तन और शिशु–विकास
- माता–पिता की भूमिका में बदलाव : संयुक्त से एकल परिवार तक
- निःसंतान दंपतियों मनोवैज्ञानिक सुखाकारी
- एकल संतान में सामाजिकीकरण, भावनात्मक संतुलन एवं समायोजन
- एकल अभिभावक परिवारों में लगाव (Attachment) और सुरक्षा-बोध

12. नीति, शासन एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य

- शिशु शिक्षा पर नीतिगत परिप्रेक्ष्य
- NEP-2020 के संदर्भ में शिशु शिक्षा
- विभिन्न देशों की प्रारंभिक बाल नीति : तुलनात्मक अध्ययन
- शिशु शिक्षा का भारतीय एवं पाश्चात्य प्रतिमान
- मातृ स्वास्थ्य नीतियाँ और शिशु विकास
- शिशु शिक्षा में समकालीन विषय एवं चुनौतियाँ
- सतत विकास लक्ष्य (SDGs) एवं प्रारंभिक शिशु विकास

13. परिवार, समाज, समावेशन एवं अधिकार

- माता–पिता की भूमिका : पालन-पोषण से सह-निर्माण तक
- परिवार, अभिभावक एवं समाज की भूमिका
- समानता एवं समावेशी शिक्षा (Equitable & Inclusive Education)
- विशेष आवश्यकता वाले शिशु (Early Identification & Intervention)
- ऑटिज़्म, ADHD एवं प्रारंभिक पहचान
- समावेशी प्रारंभिक हस्तक्षेप प्रतिमान
- सांस्कृतिक एवं सामाजिक विविधता
- शिशु अधिकार

14. डिजिटल युग, शोध एवं नवाचार

- गर्भसंस्कार के लिए नवाचार और भविष्य की दिशा
- डिजिटल युग में शैशव विकास : अवसर और चुनौतियाँ
- शिशु विकास में मीडिया छवियों का प्रभाव
- डिजिटल उपकरण (गैजेट्स) एवं शिशु विकास
- शिशु शिक्षा में शोध एवं नवाचारात्मक प्रथाएँ
- शोध से नीति निर्माण (Research-to-Policy)
- समग्र बाल विकास मॉडल : चिकित्सा–शिक्षा–संस्कृति का एकात्म दृष्टिकोण
- समग्र शिशु विकास के लिए राष्ट्रीय रोडमैप
- कोई अन्य प्रासंगिक विषय

पेट्रोन

डॉ. टी. एस. जोशी
कुलगुरु
चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी, गांधीनगर, गुजरात

निमंत्रक

डॉ. नीलेश पंड्या
कुलसचिव
चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी, गांधीनगर, गुजरात

परिसंवाद नियामक

डॉ. राकेश पटेल
अध्यक्ष
प्रि-नेटल केर विभाग
चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी

डॉ. रूपम उपाध्याय
अध्यक्ष
टोडलर एज्युकेशन विभाग
चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी

परिसंवाद संयोजक

डॉ. वृंदन जयस्वाल
चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी,

परिसंवाद समिति

- डॉ. जल्पा पटेल
- डॉ. सुनिल जादव
- डॉ. हयाति वोरा
- डॉ. स्वाति त्रिपाठी
- डॉ. श्वेता मलिक
- श्रीमती दिव्या रावल
- श्री देवांगी सोंडागर
- राजश्री पटेल

IMPORTANT DATES

Registration and payment

12/04/2026

https://forms.gle/eYCywon3zEmuLskW9

Full Paper Submission

12/04/2026

https://forms.gle/eYCywon3zEmuLskW9

For Registration :-

डॉ. स्वाति त्रिपाठी : 731 701 5722

डॉ. हयाति वोरा : 94292 99995

For Accommodation:-

डॉ. सुनिल जादव : 95744 65446

श्री दक्षेश पटेल : 9724313700

Particular	**Faculty**	**Researcher & Students or laymen**	**CRU Beneficiaries & MoU Institutes**
Without Accommodation	Rs.1000/-	Rs. 500/-	Free for Tapovan and Shishu Paramarshan Beneficiaries**
With Accommodation (Arrangement of Accommodation facility available only for 17th April 2026)	Rs. 2500/-	Rs. 1000/-	
Only Participation (No Accommodation facilities available for participation only)	Rs. 350/-	Rs. 100/-	Also Free for MoU Institutes Representatives

** गर्भसंस्कार एवं शिशु परामर्शन के लाभार्थी रजिस्ट्रेशन फॉर्म में मासिक फी की रसीद जोड़ें |

Account Details:

- **Name of Bank & Branch** : HDFC Bank, Sector-21, G'nagar.
- **Account Holder Name** : Registrar, Children's Research University, Gandhinagar
- **Account Number** : 50100556495137
- **IFSC** : HDFC0007455

शोध-पत्र लेखन हेतु प्रारूप

शोध-पत्र प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित निर्देशों का पालन करना अनिवार्य है—

- शोध-पत्र MS-Word संस्करण 2003 या उससे उच्च में तैयार किया जाना चाहिए।
- मार्जिन: बायाँ – 1.5 इंच, दायाँ – 1 इंच, ऊपर – 1 इंच, नीचे – 1 इंच
- पेपर साइज: A4, लाइन स्पेसिंग: 1.5, एलाइनमेंट: जस्टिफाइड
- शोध-पत्र का शीर्षक (Title) केंद्र (Central Alignment) में होना चाहिए।
- शीर्षक के नीचे लेखक का नाम, पदनाम (Designation) तथा संस्थान का नाम दायीं ओर (Right Alignment) में दिया जाए।
- संदर्भ (References) APA अथवा MLA शैली में प्रस्तुत किए जाएँ।
- भाषा: अंग्रेज़ी / गुजराती / हिंदी / संस्कृत
- अंग्रेज़ी भाषा के लिए फ़ॉन्ट: Times New Roman
- गुजराती एवं संस्कृत भाषा के लिए फ़ॉन्ट: Shruti
- हिंदी भाषा के लिए फ़ॉन्ट: Mangal
- फ़ॉन्ट साइज:

1. शीर्षक: 14
2. मुख्य पाठ (Text): 12

- हस्तलिखित शोध-पत्र स्वीकार नहीं किए जाएँगे।

PAPER PUBLICATION

- Selected BEST Papers will be published in an ISBN Book by Children's Research University

NOTE

- Posters relevant to the given themes and Sub-themes are invited for presentation. The Poster should be: The size of the poster must be 4X3 Ft JPG format.

TWO DAYS NATIONAL SEMINAR

ON

"संतान विकास की समग्र दृष्टि: गर्भाधान से शैशव शिक्षा तक"

"A Holistic Perspective on Child Development: From Preconception to Toddler's Education"

सम्मानीय विद्वतजन,

अत्यंत विनम्रता के साथ हम आपको १७ एवं १८ अप्रैल, 2026 (शुक्रवार एवं शनिवार) को आयोजित होने वाले दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में सादर आमंत्रित करते हैं। आपकी विद्वतापूर्ण उपस्थिति से इस आयोजन की गरिमा और भी बढ़ेगी। कृपया अपनी गरिमामयी उपस्थिति से इस अवसर को सुशोभित कर हमें अनुग्रहीत करें।

Children's Research University
Every Child matters
सत्यम् ऋतम् बृहत्

Children's Research University
Near Jalaram Temple, Opp. Public Garden,
Sector 29, Gandhinagar-382030